eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

उदारवाद, समकालीन उदारवाद व पश्चिमी उदारवाद

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 20 Jan 2025, Accepted: 25 Jan 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2025

Abstract

उदारवाद एक राजनीतिक और दार्शनिक विचारधारा है, जो स्वतंत्रता, समानता, मानवाधिकार और लोकतंत्र के सिद्धांतों पर आधारित है। इसका मूल उद्देश्य व्यक्ति की स्वतंत्रता को संरक्षित करना और सरकार की शक्ति को सीमित करना है। पश्चिमी उदारवाद विशेष रूप से यूरोप और अमेरिका में विकसित हुआ और इसमें व्यक्तिवाद, पूंजीवाद और संवैधानिक सरकार के सिद्धांत सम्मिलित हैं। यह पता चलता है कि उदार समाज एक सामाजिक व्यवस्था पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जिसमें मजबूत सहमति से, नागरिक कुछ अधिकार के आधार पर कुछ नैतिक दावों को स्वीकार करते हैं। एक व्यापक ईसाई सामाजिक व्यवस्था – विशेष रूप से वह जो असहमतिपूर्ण प्रोटेस्टेंट से उभरी है – मानदंडों को व्यक्त करने और उन्हें मजबूत करने वाली सांस्कृतिक व्यवस्था के साथ अधिकार समस्या को हल करती है। और एक गहन स्थानीयता ज्ञान की समस्या को हल करती है क्योंकि लोग न केवल सामाजिक और व्यावसायिक जीवन के लिए एक जानने योग्य दुनिया में रहते हैं, बल्कि उन्हें मार्गदर्शन करने के लिए अनुभवों के भंडार के साथ राजनीतिक विचार–विमर्श में संलग्न हो सकते हैं।

शब्द कुंजी– उदारवाद, पश्चिमी उदारवाद, समकालीन उदारवाद, स्वतंत्रता, मानवाधिकार, लोकतंत्र और विधि का शासन

Introduction

उदारवाद (Liberalism) लैटिन शब्द "Liber" से लिया गया है, जिसका अर्थ स्वतंत्रता होता है। यह विचारधारा व्यक्ति की स्वतंत्रता, मानवाधिकारों, लोकतंत्र और विधि के शासन पर बल देती है। विभिन्न दार्शनिकों और राजनीतिक विचारकों ने इसे परिभाषित किया है। जॉन लॉक के अनुसार उदारवाद व्यक्ति की प्राकृतिक स्वतंत्रता, संपत्ति के अधिकार और सीमित सरकार के सिद्धांतों पर आधारित है। जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार व्यक्ति की स्वतंत्रता तभी तक सीमित हो सकती है, जब तक वह दूसरों को हानि न पहुँचाए। ''व्यक्तिगत स्वतंत्रता'' व्यक्ति को स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए, जिसमें विचार, अभिव्यक्ति और कार्य करने की स्वतंत्रता शामिल है। लोकतंत्र'' जनता की संप्रभुता, चुनाव प्रणाली और संवैधानिक शासन आवश्यक हैं। कानूनी समानता'' कानून के समक्ष सभी व्यक्तियों को समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। बाजार की स्वतंत्रता'' पूंजीवाद और मुक्त बाजार की अवधारणा, जिसमें सरकार का हस्तक्षेप न्यूनतम हो। 'मानवाधिकारों की रक्षा– प्रत्येक व्यक्ति को मूलभूत अधिकार प्राप्त होने चाहिए, जैसे स्वतंत्रता, सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि। पश्चिमी उदारवाद मुख्य रूप से 17वीं और 18वीं शताब्दी में विकसित हुआ। यह मुख्य रूप से यूरोप और अमेरिका में अपने आधुनिक स्वरूप में उभरा। ''प्राकृतिक अधिकार'' जॉन लॉक ने प्राकृतिक अधिकारों (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) की अवधारणा प्रस्तुत की। ''सामाजिक अनुबंध'' रूसो और हॉब्स ने यह विचार दिया कि समाज में शांति बनाए रखने के लिए नागरिकों और सरकार के बीच एक अनुबंध होना चाहिए। ''संवैधानिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

सरकार'' पश्चिमी उदारवाद में सरकार को संविधान के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। ''व्यक्तिवाद और पूंजीवाद'' एडम स्मिथ ने मुक्त बाजार और पूंजीवाद की वकालत की, जिसमें सरकार का न्यूनतम हस्तक्षेप हो।

''पश्चिमी उदारवाद के प्रमुख विचारक''

1. ''जॉन लॉक'' प्राकृतिक अधिकारों और सीमित सरकार के समर्थक।
2. ''जॉन स्टुअर्ट मिल'' स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद के सिद्धांत प्रस्तुत किए।
3. ''एडम स्मिथ'' आर्थिक उदारवाद और पूंजीवाद की अवधारणा दी।
4. ''थॉमस हॉब्स'' सामाजिक अनुबंध का सिद्धांत प्रस्तुत किया।
5. ''ज्यां–जैक्स रूसो'' लोकतांत्रिक सरकार की अवधारणा दी।

समकालीन उदारवाद 20वीं और 21वीं सदी में विकसित हुआ एक राजनीतिक और दार्शनिक विचारधारा है, जो स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों पर जोर देता है। यह पारंपरिक (क्लासिकल) उदारवाद से अलग है क्योंकि यह केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक न्याय पर भी ध्यान केंद्रित करता है। समकालीन उदारवाद व्यक्तियों के अधिकारों, जैसे कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता, और समानता को बढ़ावा देता है। यह विचारधारा मानती है कि सरकार को केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा ही नहीं करनी चाहिए, बल्कि अवसरों की समानता सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय भूमिका भी निभानी चाहिए। समकालीन उदारवाद सामाजिक कल्याणकारी नीतियों, जैसे कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, और गरीबी उन्मूलन का समर्थन करता है। यह न तो पूरी तरह से मुक्त बाजार का समर्थन करता है और न ही पूर्ण सरकारी नियंत्रण का, बल्कि एक मिश्रित अर्थव्यवस्था (MiÛed Economy) की वकालत करता है। यह स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, कानून के शासन और मानवाधिकारों के संरक्षण को प्राथमिकता देता है। समकालीन उदारवाद विविधता, बहुसंस्कृतिवाद और लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है।

समकालीन उदारवाद के प्रमुख विचारक जॉन रॉल्स (John Rawls) ने Theory of Justice (1971) में न्याय के सिद्धांत को प्रस्तुत किया, जिसमें समानता और निष्पक्षता पर जोर दिया गया। अमर्त्य सेन ने विकास और स्वतंत्रता के संबंध को उजागर किया और सामर्थ्य दृष्टिकोण (Capability Approach) विकसित किया। रॉबर्ट नोज़िक हालांकि न्यूनतम राज्य के पक्षधर थे, लेकिन उनकी आलोचना से समकालीन उदारवाद की बहस को नई दिशा मिली।

आधुनिक राजनीति में समकालीन उदारवाद आज के समय में विभिन्न राजनीतिक दलों और आंदोलनों के माध्यम से प्रकट होता है, जैसे कि कल्याणकारी राज्य की अवधारणा, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के लिए आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने की नीतियाँ, लैंगिक समानता और अधिकार। समकालीन उदारवाद स्वतंत्रता और समानता के संतुलन की तलाश करता है। यह केवल आर्थिक स्वतंत्रता पर ध्यान केंद्रित नहीं करता, बल्कि सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और समावेशिता को भी महत्व देता है। लोकतांत्रिक संस्थाओं और कल्याणकारी राज्य की वकालत करते हुए, यह विचारधारा आधुनिक समाज की जटिल चुनौतियों का उत्तर देने का प्रयास करती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

''समकालीन उदारवाद और इसकी चुनौतियाँ–

आज के समय में उदारवाद को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

1. ''आर्थिक असमानता'' पूंजीवादी उदारवाद के कारण संपत्ति का असमान वितरण बढ़ रहा है।

2. ''लोकतांत्रिक संकट'' कई देशों में लोकतांत्रिक मूल्यों पर खतरा मंडरा रहा है।

3. ''राष्ट्रवाद बनाम उदारवाद'' कई देशों में राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे उदारवादी नीतियाँ प्रभावित हो रही हैं।

4. ''तकनीकी और निजता के मुद्दे'' डिजिटल युग में व्यक्तियों की स्वतंत्रता और निजता पर नए खतरे उत्पन्न हो रहे हैं।

उदारवाद के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक प्रगतिवाद है। एंग्लो–अमेरिकन उदारवाद और रूढ़िवाद एक समान दार्शनिक वंश साझा करते हैं और दोनों ही ज्ञानमीमांसा के मामले में संदेहवादी हैं, कुछ ज्ञान के दावों के बारे में सतर्क हैं। इस भ्रमवाद के कारण उदारवादी और रूढ़िवादी स्वीकार करते हैं कि मनुष्यों को विचारधारा की सुरक्षा के बिना और इस पूर्ण जागरूकता के साथ जीना और कार्य करना चाहिए कि हमारे सभी विकल्प गहन आकस्मिकता की दुनिया में किए जाते हैं। अमेरिका की दो महान बौद्धिक परंपराओं के बीच सबसे अलग विशेषता अधिकार की उनकी समझ से संबंधित है। रूढ़िवादी अधिकार की आवश्यकता को पहचानते हैं, वास्तविकता में निहित कुछ अंतिम कानून की जो ऐतिहासिक अस्तित्व के प्रवाह में पाए जाने वाले कानूनों और शक्तियों से अधिक है। उदारवादी अधिकार के बारे में भी संदेहवादी रहते हैं। उदारवाद के साथ समस्या – और वह जो हम नहीं देख सकते – अधिकार की समस्या है। इस बीच, प्रगतिवाद शक्ति और नैतिक निश्चितता के बारे में है। आर्थिक वैश्वीकरण पर हमारे भविष्य को दांव पर लगा दिया है, और अमेरिकी श्रमिकों के व्यापक समूहों, नीले और सफेद कॉलर दोनों के अनुभवों, आशाओं, भय और चिंताओं को नज़रअंदाज़ कर दिया है। कामकाजी वर्ग के अमेरिकी दशकों से शक्ति और सुरक्षा खो रहे हैं, लेकिन हमारी वैश्विक अर्थव्यवस्था में हाल के घटनाक्रम मध्यम वर्ग के ठहराव और इसी तरह के अलगाव की ओर ले जा रहे हैं। प्रगतिशील, अमेरिकियों को उनके मानदंडों को प्रतिबिंबित करने और परिष्कृत करने के बजाय बदलने पर आमादा हैं, वे पत्रकारिता, शिक्षा और सिलिकॉन वैली, अन्य संस्थानों में अपने संरक्षित साइलो से दुनिया को देखने लगे हैं। उन्होंने अमेरिकी नागरिकों के अनुभवों से संपर्क खो दिया है क्योंकि उनकी नैतिक निश्चितता उन लोगों के अनुभवजन्य ज्ञान को अप्रासंगिक बना देती है जो उनसे अलग हैं, जो उनसे असहमत हैं।

क्या उदारवादी उदारवाद को "खुद से" बचा सकते हैं? पश्चिमी जीवन शैली और हमारी उदार लोकतांत्रिक प्रणालियाँ वैश्विक शक्ति मुख्य रूप से चीन की ओर, में इस नाटकीय बदलाव से बच सकती हैं, तो, क्या समस्या आंतरिक है – उदारवाद स्वयं – या वैश्विक और संरचनात्मक – एक गैर–उदारवादी वैश्विक शक्ति का उदय? प्रगतिशील और उदारवादियों के बीच अंतर करने में अपनी विफलता के बावजूद, हम इन सभी प्रगतिशील प्रवृत्तियों को समझते हैं और उनकी तीखी आलोचना करते हैं। इतिहास के प्रगतिशील दुरुपयोग, अतीत के बारे में उनकी गहरी अज्ञानता और उस अतीत से हम जो सबक सीख सकते हैं, तथा नव–उदारवादी अर्थव्यवस्था के उनके अजीबोगरीब आलिंगन की आलोचनाएँ, सभी उनके लक्ष्य पर पहुँचती हैं। हम राज्यविहीन अभिजात वर्ग या प्रगति के उन पुरोधाओं के नेतृत्व में नहीं चल सकते, जिनका संकीर्ण बौद्धिक ध्यान उन्हें यह विश्वास दिलाता है कि तेज़ तकनीकी प्रगति द्वारा समर्थित व्यक्तिगत स्वतंत्रतावाद

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

एक खुशहाल समाज का निर्माण करता है। फिर भी, लेबल रहित प्रगतिवादियों की आलोचना में किसी के पक्ष की खामियों, ज्यादतियों के निदान का चरित्र है। हम यह नहीं पहचानते कि यह उदारवाद के संकट का हिस्सा है, जिसके पास ऐसे युग में अपनी पतनशीलता को बनाए रखने के लिए संसाधनों की कमी है जहाँ अधिकार का संकट हमें विचारधारा के प्रलोभन के प्रति संवेदनशील बनाता है। 1989 के बाद इतिहास में एक अजीबोगरीब मोड़ है, जब बहुत से उदारवादियों का मानना था कि हम इतिहास के अंत तक पहुँच चुके हैं। इन तर्कों के रूप अलग–अलग थे, लेकिन उनमें एक पूर्वानुमानित उद्देश्य तत्व और मानव स्वभाव के बारे में कुछ दृष्टिकोण था, जिसने इसे इतना पूर्वानुमानित बना दिया। 2016 के बाद चीजें अलग दिखती हैं। हम एक या दो दशक पहले देखे गए भविष्य को नहीं देख रहे हैं। हमारे पास एक अलग भविष्य है, जिसकी हमने उम्मीद की थी, क्योंकि हमने खुद को गलत इतिहास बताया। इन गलत इतिहासों ने अभिजात वर्ग के लिए धारणाओं का एक खतरनाक समूह तैयार किया। लोकतंत्र और प्रतिनिधि सरकार के स्वाभाविक आकर्षण के बारे में एक धारणा ने कई प्रशासनों, रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक में विदेश नीतियों को प्रभावित किया। लोकतांत्रिक स्वतंत्रता के प्रति अपरिहार्य आकर्षण में यह विश्वास 9/11 से बच गया और इसने उस हमले के जवाब में युद्धों के लिए दार्शनिक आधार प्रदान किया।

यह बुश के दूसरे उद्घाटन भाषण में सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया था, जो इस अमूर्त विचारधारा का एक दक्षिणपंथी संस्करण था। वाशिंगटन ने न केवल एक गलत ऐतिहासिक नियतिवाद के आधार पर सैन्य कार्रवाई की, बल्कि इसी विश्वास ने आर्थिक वैश्वीकरण के लिए एक दार्शनिक आधार के रूप में कार्य किया, जिसने नई तकनीकी प्रगति और भारी मुनाफा लाया। यदि सार्वभौमिक लोकतंत्रीकरण की रक्षा में सैन्य कारनामों ने पश्चिम के बाहर बहुत से लोगों के साथ अमेरिकी ब्रांड को नुकसान पहुंचाया, वैश्वीकरण की सफलता ने पश्चिम के भीतर इसे नुकसान पहुंचाया। उदार लोकतंत्र का आधार मध्यम वर्ग है। कोई भी उदार लोकतंत्र मजदूर वर्ग के व्यापक सर्वहाराकरण या सिकुड़ते मध्यम वर्ग के अलगाव से बच नहीं सकता है, जो दोनों ही वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप हुए हैं।

आर्थिक वैश्वीकरण के विषय पर, विशेष रूप से, राजनीतिविदों ने एक ऐसी रूपरेखा तैयार की है, जो मेरे विचार में एक उत्कृष्ट और महत्वपूर्ण बिंदु है। यह वास्तव में शासक वर्ग की विफलता है। उदार अभिजात वर्ग (जिन्हें मैं गैर–उदारवादी, प्रगतिशील के रूप में पहचानना पसंद करता हूं) उदारवाद में विफल रहे हैं, राजनीतिविदों का दावा है कि वे विफल हुए हैं क्योंकि ऐतिहासिक तथ्यों और सार्वभौमिक मान्यताओं के बारे में उनके विश्वासों ने हमें ऐसे युद्धों में ले जाया है, जिन्होंने खुद को और दूसरों को नुकसान पहुंचाया है। वे असफल इसलिए हुए हैं क्योंकि हमारे अभिजात वर्ग पहचान के मुद्दों पर जुनूनी हैं जबकि वैश्वीकरण के हारे हुए लोगों के बढ़ते वर्ग की दुर्दशा को अनदेखा कर रहे हैं। वे असफल इसलिए हुए हैं क्योंकि उनकी कठोर नैतिकता ने उन्हें उन लोगों पर नस्लवादी के रूप में हमला करने के लिए प्रेरित किया है जो उनकी नीतियों से आहत हुए हैं। राष्ट्रवाद और सामूहिक पहचान के महत्व को समझने में इन अभिजात वर्ग की विफलता ने उन्हें राष्ट्रवाद के उभरते सबूतों के बारे में गलत अनुमान लगाने के लिए प्रेरित किया है।

राजनीतिविदों के विचारों में दो प्रतिप्रश्न मंडरा रहे हैं। एक है चीन, वैश्विक पूंजीवाद की एक सत्तावादी प्रजाति, जो पश्चिमी अभिजात वर्ग की सार्वभौमिक मान्यताओं को गलत साबित करती है। चीन की आर्थिक सफलता न केवल अमेरिका और यूरोप के आर्थिक आधिपत्य के लिए एक सीधा खतरा है, बल्कि यह एक

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

सम्मोहक उदाहरण प्रस्तुत करती है कि सत्तावादियों द्वारा शासित अन्य राष्ट्र अधिकारों, लोकतंत्र या नैतिकतावादी अमेरिका के प्रति श्रद्धा को निगले बिना इसे अपना सकते हैं। दूसरा राजनीतिविद ट्रम्प है। राजनीतिविद मतदाताओं को समझाना चाहते हैं, भले ही वे उनसे प्यार न करें, लेकिन राजनीतिविद ट्रम्प शासक वर्ग की सफलता/विफलता का ही समावेश हैं। उनकी जीत साबित करती है कि अमेरिकी अभिजात वर्ग ने कामकाजी और मध्यम वर्ग को सफल/विफल कर दिया है। ट्रम्प समर्थकों के नस्लवाद पर हमला करने के लिए दौड़ते इन अभिजात वर्ग की सीमित नैतिक दृष्टि ने अमेरिकी उदारवाद को कगार पर पहुँचा दिया है, जिससे एक प्रतिक्रिया को बढ़ावा मिला है जो उदारवादी परियोजना को खत्म करने की धमकी देता है।

राजनीतिविदों द्वारा इतिहास का दुरुपयोग करने और उसे मूर्त रूप देने वालों पर उंगली उठाने के बावजूद, राजनीतिविदों का तर्क अंततः अतीत से मिले सबक (जिसे वह इतिहास के साथ मिला देता है) के बारे में उसकी अपनी धारणाओं पर आधारित है। राजनीतिविदों के तर्क की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह उदारवाद के संकट के इतिहास की उपेक्षा करता है और उस समस्या के मूल में जाने में विफल रहता है।

उदारवाद की समस्या संयुक्त राज्य अमेरिका में कम से कम प्रगतिशील युग की शुरुआत से ही एक गंभीर चिंता का विषय रही है और फिर 1914 से अटलांटिक राष्ट्रों के समुदाय में गहन बहस का विषय रही है। व्यक्तिगत अधिकारों, स्वतंत्रता, प्रतिनिधि और सीमित सरकार के बारे में विचारों के एक समूह के रूप में उदारवाद, यूरोप में वास्तव में समस्याग्रस्त हो गया क्योंकि साम्यवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद उन जगहों पर तेज़ी से सत्ता में आए जिन्हें उदार लोकतंत्र की राह पर माना जाता था – या ऐसे स्थान जो पहले से ही उदारवाद के फल का स्वाद चख चुके थे। वाल्टर लिपमैन ने, शायद किसी भी अन्य सार्वजनिक बुद्धिजीवी से ज़्यादा, अमेरिका में उदारवाद की समस्या को हल करने की कोशिश की। 1922 में अपनी क्लासिक पब्लिक ओपिनियन से लेकर 1955 में एसेज़ इन द पब्लिक फिलॉसफी के साथ समस्या को हल करने के अपने आखिरी प्रयास तक, लिपमैन ने माना कि उदारवाद के लिए अंतर्निहित समस्या अधिकार के बारे में थी। उदारवाद विकल्पों, वरीयताओं, अपनी खुशी के लिए काम करने की स्वतंत्रता, अपनी संपत्ति का उपयोग करने, अपनी शर्तों पर जीने पर आधारित है। ऐसे उदार समाजों का नागरिक अपनी शर्तों पर अपना जीवन बना सकता है। अपने जीवन को स्वयं संचालित करने के लिए भरोसा किए जाने पर, एक नागरिक शासन में कैसे भाग ले सकता है, जहाँ उसका ज्ञान राष्ट्रीय सरकार के सामने आने वाले जटिल मुद्दों को समझने के लिए बहुत सीमित है?

लेकिन अगर वह सामाजिक व्यवस्था कमजोर हो जाती है और मानदंड और शासन संबंधी धारणाएँ विवादित हो जाती हैं, तो अधिकार का सवाल अचानक दबावपूर्ण हो जाता है। लगभग 1880 के बाद अमेरिका में बौद्धिक धाराओं ने नागरिकों के बड़े समूहों और एक बौद्धिक अभिजात वर्ग के प्रभावशाली सदस्यों के बीच बढ़ती दरार पैदा की, जो अब पिछली पीढ़ियों की धार्मिक और ऑन्टोलॉजिकल मान्यताओं से बंधे नहीं थे। यदि किसी समाज में बहुत सारे भगवान हैं या भगवानों के लिए बहुत सारी चुनौतियाँ हैं, तो वे आम सहमति बनाने के लिए कहाँ जाएँगे? और पहले सिद्धांतों के बारे में आम सहमति के बिना एक लोकतांत्रिक गणराज्य कैसे काम कर सकता है? अधिकार पर सहमति के बिना एक समाज सत्ता की ओर आकर्षित होता है। इसी तरह, गाँव या छोटे शहर की जानने योग्य दुनिया ने अपना महत्व खो दिया क्योंकि लोग अब एक तेज़ी से अमूर्त दुनिया में चले गए, एक ऐसी दुनिया जिसमें क्षेत्रीय बाज़ारों ने वैश्विक बाज़ारों को रास्ता दिया;

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

स्थानीय सांस्कृतिक रूपों को राष्ट्रीय संस्करणों के लिए बदल दिया गया। हमारी दुनिया अधिक अमूर्त हो जाती है और जैसे–जैसे राजनीतिक प्रश्न राष्ट्रीय मुद्दों की ओर मुड़ते हैं, किसी भी मतदाता के अनुभवों से परे विषयों पर जनमत संग्रह की आवश्यकता होती है, हमारे पास व्यापक सामान्यीकरण में सोचने और बोलने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है, जिसका हम ज्ञान या अनुभव से समर्थन नहीं कर सकते हैं – केवल विचारधारा या जनमत की शक्ति से।

1950 के दशक तक, उत्सुक उदारवादियों को अधिकार के इस संकट के बारे में पूरी तरह से पता चल गया था। लिपमैन ने एक सार्वजनिक दर्शन की पेशकश करने के अपने अंतिम प्रयास में संघर्ष किया, जो एक स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक अधिकार प्रदान करेगा, प्राकृतिक कानून का एक आधुनिक संस्करण तैयार करने के लिए। लेकिन इसके निर्माता के रूप में ईश्वर के बिना प्राकृतिक कानून क्या है? और बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के सबसे प्रभावशाली बौद्धिक अभिजात वर्ग के लिए ईश्वर सबसे अच्छे रूप में एक निजी विश्वास और सबसे खराब रूप में एक दखल देने वाली कल्पना बन गया था। आज उदारवाद के बारे में जो सच है वह यह है कि यह व्यवस्था का कोई वादा नहीं कर सकता है, कोई संगठित विश्वास नहीं है जो हमें इसके अधिकार की सुंदरता की ओर आकर्षित करता है। बिना अधिकार के सत्ता की धाराएँ हमारे चारों ओर मनमाने ढंग से नाचती हैं। व्यवस्था की इच्छा निश्चितता के नए दावों और सामूहिक उद्देश्यों की ओर मनमाने ढंग से सत्ता को नियंत्रित करने और निर्देशित करने के वादे को आमंत्रित करती है। हम अव्यवस्थित समय में रहते हैं। इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि पिछली दो शताब्दियों में हमारी सभ्यता के सबसे लगातार और गहन अनुभव विघटन, परिवर्तन और लचीलेपन के हैं। और अगर वह ठोस है, जैसा कि मार्क्स ने कहा, हवा में पिघल जाता है, तो हम वास्तविकता से अस्तित्व की ओर, रूपों से परिवर्तन की ओर, व्यवस्था से सृजन की ओर मुड़ जाते हैं। आज, मानव शक्ति उन्नीसवीं सदी से पहले की कल्पना से कहीं ज़्यादा है, और अगर हमने अपने सामूहिक विनाश के साधन तैयार कर लिए हैं, तो हम प्रोमेथियस की आँखों से अपनी लगातार बदलती छवियों में नई बनी दुनिया को भी देख सकते हैं।

हमारी आशा वास्तविकता में पाई जाती है। अस्तित्व का रचनात्मक खेल कभी भी वास्तविकता की स्थिरता से बच नहीं पाता। सभ्यता के लिए एक शर्त यह है कि वह वास्तविकता में निहित आदेश सिद्धांतों को पहचाने और अपने सदस्यों के बीच इन सिद्धांतों को समझने के बौद्धिक और आध्यात्मिक उपकरणों को विकसित करे।

उदारवाद एक प्रभावशाली विचारधारा है जिसने आधुनिक लोकतंत्र और मानवाधिकारों को मजबूत किया है। पश्चिमी उदारवाद ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, कानूनी समानता और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है। हालाँकि, वर्तमान समय में इसे नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए उदारवाद को समय के अनुसार स्वयं को परिवर्तित करना होगा और अधिक समावेशी तथा न्यायसंगत दृष्टिकोण अपनाना होगा।

उदारवाद की विभिन्न शाखाएँ समय के साथ विकसित हुई हैं और अलग.अलग संदर्भों में भिन्न रूप धारण कर चुकी हैं। समकालीन उदारवाद आज के सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास करता हैए जबकि पश्चिमी उदारवाद का गहरा प्रभाव लोकतांत्रिक देशों की राजनीति और नीतियों पर देखा जा सकता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Issue 01, January 2025

संदर्भ सूची–

1– राजनीतिक सिद्धांत की समझ, डा0 प्रीती त्रिपाठी, ठाकुर पब्लिकेशन, जुलाई 2023, पृष्ठ 214 ISBN-9789357553391

2– अंतर्राष्ट्रीय संबंध, वी0एन0 खन्ना, विकास पब्लिशिंग हाउस, ISBN-9788194376309

3- दैनिक जागरण, 22 दिसम्बर 2024

4– अमरउजाला, 26 दिसम्बर 2024

5– दैनिक जागरण, 29 दिसम्बर 2024

6– अमरउजाला, 21 दिसम्बर 2024

7– द हिन्दू, 20 दिसम्बर 2024

8– द हिन्दू, 17 दिसम्बर 2024

9– द हिन्दू, 18 दिसम्बर 2024

10– द हिन्दू, 11 दिसम्बर 2024

11– अमरउजाला, 02 दिसम्बर 2024

12– दैनिक जागरण, 03 दिसम्बर 2024

13– योजना, दिसम्बर 2024

14– योजना, नवंबर 2024

15– योजना, अगस्त 2024

16– योजना, अगस्त 2023

17– योजना, मार्च 2023

18– https://www.bbc.com/

19- https://www.bhaskar.com/

20- https://edition.cnn.com/

21- https://www.nbcnews.com/